P. R. No.: DL(S)-17/3082/2006-07-08
Regn. No.: DELHIN/2000/2473

शिरो-धारा

कटि-वस्ति

ध्यान

योग-आसन

नेत्र-धारा

आयुर्वेदिक चिकित्सा

फिजियोथैरेपी

COMPLETE BODY WORKSHOP

मिट्टी-चिकित्सा

एक्यूप्रेशर

सेवाधाम चिकित्सालय

मानव मंदिर मिशन ट्रस्ट द्वारा संचालित

57, जैन मंदिर, रिंग रोड़,
इंडियन ऑयल पेट्रोल पंम्प के पीछे,
सराय काले खाँ बस अड्डा के सामने, नई दिल्ली-110013
दूरभाष : 011-26320000, 26327911, 09999609878

प्रकाशक व मुद्रक : **श्री अरुण तिवारी**, मानव मंदिर मिशन ट्रष्ट (रजि.) जैन मंदिर आश्रम, सराय काले खाँ के सामने रिंग रोड़, पो. बो.–3240, नई दिल्ली–13, आई. जी. प्रिन्टर्स 104 (DSIDC) ओखला फेस–1 से मुद्रित। **संपादिका : श्रीमती निर्मला पुगलिया**

कवर पेज सहित
36 पृष्ठ

मूल्य 5.00 रूपये
अक्टूबर, 2008

रूपरेखा

जीवन मूल्यों की प्रतिनिधि मासिक पत्रिका

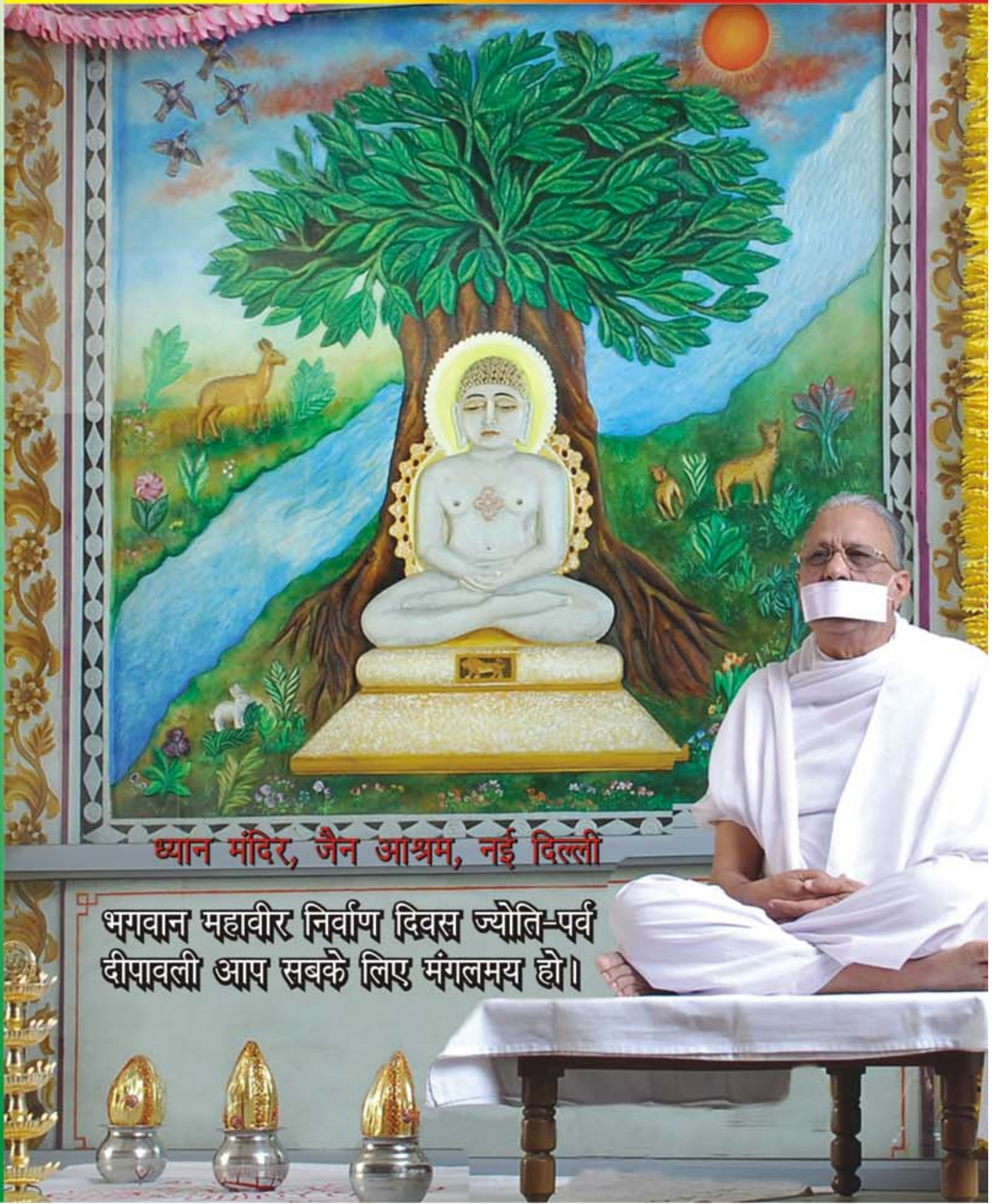

रूपरेखा

जीवन मूल्यों की प्रतिनिधि मासिक पत्रिका

वर्ष : 8 अंक : 10 अक्टूबर, 2008

: मार्गदर्शन :
पूज्या प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री जी

: सम्पादक मंडल :
श्रीमती निर्मला पुगलिया,
श्रीमती मंजु जैन

: व्यवस्थापक :
श्री अरूण तिवारी

एक प्रति : 5 रुपये
वार्षिक शुल्क : 60 रुपये
आजीवन शुल्क : 700 रुपये

: प्रकाशक :
मानव मंदिर मिशन ट्रस्ट (रजि.)
पोस्ट बॉक्स नं. : 3240
सराय काले खाँ बस टर्मिनल के सामने, नई दिल्ली - 110013
फोन नं. : 26315530, 26821348
Website: www.manavmandir.com
E-mail: contact@ manavmandir.com

इस अंक में

01. आर्ष वाणी - 5
02. बोध कथा - 5
03. संपादकीय - 6
04. गुरूदेव की कलम से - 7
05. स्वागत गीत - 11
06. विचार मंथन - 12
07. जन्म-दिवस पर विशेष- 14
08. विशेष कविता - 19
09. कहानी - 20
10. विनयांजलि - 21
11. समाचार दर्शन - 26
12. झलकियां - 30

रूपरेखा-संरक्षक गण

श्री विरेन्द्र भाई भारती बेन कोठारी, ह्युष्टन, अमेरिका
श्री शैलेश उर्वशी पटेल, सिनसिनाटी
श्री प्रमोद वीणा जवेरी, सिनसिनाटी
श्री महेन्द्र सिंह सुनील कुमार डागा, बैंकाक
श्री सुरेश सुरेखा आबड़, शिकागो
श्री नरसिंहदास विजय कुमार बंसल, लुधियाना
श्री कालू राम जतन लाल बरड़िया, सरदार शहर
श्री अमरनाथ शकुन्तला देवी, अहमदगढ़ वाले, बरेली
श्री कालूराम गुलाब चन्द बरड़िया, सूरत
श्री जयचन्द लाल चंपालाल सिंघी, सरदार शहर
श्री त्रिलोक चन्द नरपत सिंह दूगड़, लाडनूं
श्री भंवरलाल उम्मेद सिंह शैलेन्द्र सुराना, दिल्ली
श्रीमती कमला बाई धर्मपत्नी स्व. श्री मांगेराम अग्रवाल, दिल्ली
श्री धर्मपाल अंजनारानी ओसवाल, लुधियाना
श्री प्रेमचन्द ओमप्रकाश जैन उत्तमनगर, दिल्ली
श्रीमती मंगली देवी बुच्चा
धर्मपत्नी स्वर्गीय शुभकरण बुच्चा, सूरत
श्री पी.के. जैन, लॉर्ड महावीरा स्कूल, नोएडा
श्री द्वारका प्रसाद पतराम, राजली वाले, हिसार
श्री हरबंसलाल ललित मोहन मित्तल, मोगा, पंजाब
श्री पुरुषोत्तमदास गोयल सुनाम पंजाब
श्री विनोद कुमार सुपुत्र श्री बीरबल दास सिंगला,
श्री अशोक कुमार सुनीता चोरड़िया, जयपुर
श्री सुरेश कुमार विनय कुमार अग्रवाल, चंडीगढ़
श्री देवकिशन मून्दडा विराटनगर नेपाल
श्री दिनेश नवीन बंसल सुपुत्र श्री सीता राम बंसल (सीसवालिया) पंचकूला
श्री हरीश अलका सिंगला लुधियाना पंजाब
डॉ. कैलाश सुनीता सिंघवी, न्यूयार्क
डॉ. अंजना आशुतोष रस्तोगी, टेक्सास
श्री केवल आशा जैन, टेम्पल, टेक्सास
श्री उदयचन्द राजीव डागा, ह्युष्टन
श्री हेमेन्द्र, दक्षा पटेल न्यूजर्सी
श्री प्रवीण लता मेहत्ता ह्युष्टन
श्री अमृत किरण नाहटा, कनाडा
श्री गिरीश सुधा मेहता, बोस्टन
श्री राधेश्याम सावित्री देवी हिसार
श्री मनसुख भाई तारावेन मेहता, राजकोट
श्रीमती एवं श्री ओमप्रकाश बंसल, मुक्सर
डॉ. एस. आर. कांकरिया, मुम्बई
श्री कमलसिंह-विमलसिंह बैद, लाडनूं
श्रीमती स्वराज एरन, सुनाम
श्रीमती चंपाबाई भंसाली, जोधपुर
श्रीमती कमलेश रानी गोयल, फरीदाबाद
श्री जगजोत प्रसाद जैन कागजी, दिल्ली
डॉ. एस.पी. जैन अलका जैन, नोएडा
श्री राजकुमार कांतारानी गर्ग, अहमदगढ़
श्री प्रेम चंद जिया लाल जैन, उत्तमनगर
श्री देवराज सरोजबाला, हिसार
श्री राजेन्द्र कुमार केडिया, हिसार
श्री धर्मचन्द रवीन्द्र जैन, फतेहाबाद
श्री रमेश उषा जैन, नोएडा
श्री दयाचंद शशि जैन, नोएडा
श्री प्रेमचन्द रामनिवास जैन, मुआने वाले
श्री संपतराय दसानी, कोलकाता
श्री लाला लाजपत राय, जिन्दल - संगरूर

विद्वान तो बहुत होते हैं, पर विद्या के साथ जीवन का आचरण करने वाले बहुत कम होते हैं।

आर्ष-वाणी

एगो मे सासओ अप्पा नाण दंसण संजुओ।
सेसा मे बाहिरा भावा सव्वे संजोग-लक्खणा।।

-आगम

अर्थात-ज्ञान दर्शन लक्षण वाली निरन्तर साथ रहने वाली आत्मा ही शाश्वत है। शेष जितने पदार्थ हैं वे सब बाहरी हैं। आत्मा के साथ उनका संयोग हुआ है। जिनका संयोग हुआ है उनका वियोग भी हो जाएगा।

बोध-कथा

मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना

अभी पिछले दिनों बम्बई के सम्बन्ध में गुजरात और महाराष्ट्र वालों के बीच जो झगड़ा हुआ, उसे कौन भूल सकता है? उन दिनों आस्ट्रेलिया का एक परिवार बम्बई के एक होटल में ठहरा था। नीचे सड़क पर छूरे चल रहे थे। लाठियाँ चल रही थीं। एक-दूसरे का सिर फोड़ा जा रहा था। झगड़ा हो रहा था। आस्ट्रेलिया परिवार के एक युवक ने यह सब-कुछ देखा तो अपने पिता से पूछा-''ये लोग परस्पर क्यों लड़ रहे हैं?''

पिता ने उत्तर दिया-''पुत्र! ये मनुष्य नहीं। इनमें कुछ मराठी हैं, कुछ गुजराती हैं। इनमें मनुष्य कोई नहीं। यदि मनुष्य होते तो एक देश के निवासी होकर आपस में लड़ते क्यों?'' यह अद्भुत दृश्य इस देश में है। कहीं धर्म का झगड़ा है, कहीं भाषा का; कहीं प्रदेश का झगड़ा है, कहीं जाति का; कहीं राजनीति का झगड़ा है, कहीं अर्थनीति का।

झगड़े के कई आधार उत्पन्न कर रखे हैं हमने, और भुला दिया है इस बात को कि मिलाप का भी एक आधार है-यह पृथ्वी जिस पर हम रहते हैं। वह एक है। कोई किसी का दुश्मन नहीं हम अपने ही भाई बंधुओं को आपस में क्यों बांट रहे है। हम दूसरों को अच्छा बनाना चाहते हैं, स्वयं अच्छे बनना नहीं चाहते। दूसरों को मनुष्य देखना चाहते हैं, स्वयं मनुष्य बनना नहीं चाहते।

हिन्दू है कोई, मुसलमाँ कोई।
मैं पूछता हूँ तुममें, है इनसाँ कोई?

सम्पादकीय

ज्योति पर्व दीपावली

दीपावली का पर्व बहुत उमंग और उल्लास से भरा त्यौहार है। यह पूरी दुनियाँ में बड़ी धूमधाम से मनाया जाता हैं। क्योंकि अब तो हर त्यौहार हर जगह मनाए जाने लगे हैं। कारण अब हर जगह हर धर्म के लोग रहते हैं। यह त्यौहार रोशनी और आध्यात्मिकता का पर्व हैं। यह पर्व सुख, समृद्धि, वैभव, ऐश्वर्य और लक्ष्मी आगमन का पर्व है। इस दिन श्री राम चन्द्र जी चौदह वर्ष का बनवास पूरा करके लंका विजय के बाद अयोध्या लौटे थे। इस खुशी में सारी अयोध्या नगरी में घी के दीपक जलाए गए। भगवान श्री कृष्ण ने इस दिन नरकासुर का वध किया था। क्योंकि उसने अपनी आसुरी शक्तियों से लोगों को काफी नुक्सान पहुचाँया था। श्री कृष्ण ने उससे छुटकारा दिलाया इस खुशी में भी कई लोग दीवाली मनाते हैं। जैन लोग इसे इसलिए मनाते हैं क्योंकि इस दिन भगवान महावीर ने अपने चरम लक्ष्य परिनिर्वाण को प्राप्त किया था और वे सिद्ध बुद्ध मुक्त हुए थे। सिख धर्म में सिक्खों के छठे गुरू श्री हर गोंविद जी मुगलों की कैद से आध्यात्मिक प्रभाव द्वारा मुक्त हुए थे। जिससे सारे मुगलों में एक हलचल सी मच गई थी। इस त्यौहार को और धर्म के लोग भी अपने तौर तरीकों से मनाते हैं। दीपावली के पर्व पर मुख्य रूप से धन की देवी महालक्ष्मी की पूजा की जाती है। अपनी मनोकामना पूर्ण करने के लिए लोग कुबेर जी और गणेश जी की पूजा भी करते हैं। कहीं यमराज की पूजा अर्चना करते हैं और अकाल मृत्यु से बचने की अकांक्षा की जाती है। यह त्यौहार कार्तिक मास की अमावस्या को मनाया जाता है। क्योंकि अमावस्या के अंधेरे को दूर भगाने के लिए प्रकाश की सबसे ज्यादा जरूरत होती है। धनतेरस के दिन हम महा वैद्य-धन्वंतरि की आराधना भी करते हैं। जिससे हम स्वस्थ रहें। हमारी शतायु जीवन की कामना पूर्ण हो। इस दिन महालक्ष्मी के साथ-साथ माता सरस्वती की पूजा भी की जाती हैं। जिससे हम सद्‌बुद्धि और ज्ञान को प्राप्त कर सकें। इस दिन को मनाने के लिए तो बच्चों में भी काफी उत्साह होता है। क्योंकि रात में टिमटिमाते हुए दीप देखना किसे अच्छा नहीं लगता। और इसके साथ हम यहीं कामना करते हैं कि यह पर्व आप सभी के जीवन में उमंग और उल्लास भरने वाला हो।

○ निर्मला पुगलिया

दर्शन या प्रदर्शन

○ गुरूदेव की कलम से

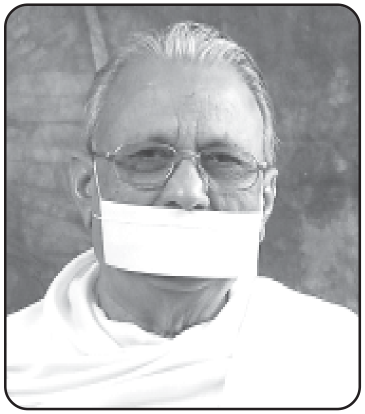

केवल ज्ञान की उपलब्धि तीर्थंकर भगवान महावीर का जन-जन के अभ्युदय और निःश्रेयस के लिए गांव-गांव, शहर-शहर विहार क्रम चल रहा था। जहां कहीं उनका पदार्पण होता, कुटिया से लेकर राजमहल तक का वातावरण आन्दोलित हो उठता। सत्ता और सम्पदा उस अकिंचन के चरणों में नतमस्तक हो जाती।

उस जन-कल्याणकरी पद यात्रा के बीच भगवान का दशार्णपुर आगमन हुआ। राजा दशार्णभद्र ने जब यह संवाद सुना कि तीर्थंकर भगवान महावीर का उसके नगर में पदार्पण हुआ है, खुशी के मारे उनका दिल बांसों उछलने लगा। जिन तीर्थंकर भगवान की अलौकिक सम्पदा और पारदर्शी व्यक्तित्व की चर्चा वह आज तक दूर-दूर से ही सुनता रहा था, आज उसे उस महिमामण्डित महापुरूष के साक्षात् दर्शन का अवसर मिलेगा, इससे अधिक पुण्य का क्षण उसके जीवन में और कौन-सा आयेगा। मन-ही-मन निर्णय लिया। कल सवेरे समवसरण में भगवान के दर्शन से आत्म-लाभ करूंगा।

महापुरूषों के पारस-व्यक्तित्व के समीप जो भी लोहा जाता है, स्वर्ण बनने की ललक उसके मन मे जगती ही है। यही तो उस व्यक्तित्व का अतिशय प्रभाव होता है। दशार्णभद्र का चित्त भी उसी भूमिका पर खड़ा है। वह सोच रहा है, कब सूर्योदय हो, भगवान समवसरण में धर्म-देशना के लिए विराजमान हों, मैं भगवान के दर्शन करूं, और जन्म-जन्मान्तरों से अंधकारग्रस्त मेरे चित्त में भी दर्शन की ज्योति प्रज्जवलित हो।

प्रदर्शन की ललक

तभी अचानक एक विचार बिजली की तरह दिमाग में क्रौंध जाता हैं। सुना है ऐसा, जंहा कहीं पदार्पण होता है तीर्थंकर महावीर का, असंख्य लोग उमड़ पड़ते हैं उनका प्रवचन सुनने के लिए। वे लोग, किसी एक जाति के नहीं, किसी एक राज्य के नहीं। प्रान्त और राज्य, इन सारी भेद की दीवारों से ऊपर इस निरालम्ब आकाशी व्यक्तित्व की छाया में

बैठते ही हर कोई एक अनिर्वचनीय आनन्द की धारा में डूब जाता है। यह सारे भेद तो सत्ता में होते हैं। राजनीति में होते हैं, धन वैभव में होते हैं। अनन्त आकाश जैसी निरालम्ब चेतना में इन दीवारों को अवकाश ही कहां होता है। इसीलिए तो भगवान के समवसरण में मानव, देव,पशु और पक्षी सभी सम्मिलित होते हैं। कैसा अपूर्व अवसर मिला है मुझे ऐसे युग पुरूष के दर्शन का और इसके साथ ही साथ बाहर से समागत असंख्य लोगों के समक्ष अपने वैभव और शक्ति के प्रदर्शन का भी।

राजा को एक दुर्लभ अवसर मिला था कि वह दर्शन का दीप अपने घर में जला ले। पर वह भटक गया अपने ही तमसान्ध में प्रकाश के राज पथ से। भीतर के अंहकार के प्रकट होने के असंख्य मार्ग है। वह किस मार्ग से प्रकट होकर व्यक्ति को कब पथ से विचलित कर दे, इसका पता लगना भी कठिन होता है। किसी को अपने धन का अहंकार है, किसी को रूप और यौवन का अहंकार है, किसी को सत्ता और वैभव का अहंकार है। किसी को विद्वता का अहंकार है। किसी को ध्यान-मौन, तपस्या और साधना का अहंकार है। अहंकार से भरा है अखिल विश्व, अहंकार से भरा है आदमी। अनेकों चेहरों को ओढ़े प्रकट होता है अहंकार। और वह जब भी प्रकट होता है, व्यक्ति दर्शन से हटकर प्रदर्शन में चला जाता है। दर्शन और प्रदर्शन में शाब्दी दृष्टि से बहुत अन्तर नहीं है। दर्शन की आदि में 'प्र' का संयोग हुआ कि प्रदर्शन बन गया। किन्तु आर्थी दृष्टि से इनमें आकाश पाताल का अन्तर है। दर्शन जैसे जंगल की पगडण्डियों से निकल राजमार्ग पर आ गए हों, प्रदर्शन जैसे राज पथ को छोड़कर कंटीली झाड़ियों वाली पगडंडियों में उलझ गए हों। दर्शन जैसे तमस् की काली घटाओं मे कोई ज्योति किरण-प्रकट हुई हो और प्रदर्शन, जैसे उगने से पहले ही सूरज अस्त हो गया हो, खिलने से पहले ही फूल मुरझा गया हो।

दीप पर काली घटाएं

कुछ ऐसा ही घटित हो रहा है राजा दशार्णभद्र के साथ। दर्शन का दीप जलने से पहले ही प्रदर्शन की काली घटाएं मन के आकाश पर उमड़-घुमड़कर आने लगी। सोचने लगा वह, भगवान महावीर के समवसरण में धर्म देशना सुनने के लिए अनेक पड़ौसी राज्यों से सहस्त्रों लोग आएंगे। मेरे वैभव, समृद्धि शक्ति व मेरे सैन्य बल की प्रभावशाली छाप लोगों पर जाये, इस दृष्टि से यह स्वर्णिम अवसर है क्यों न मैं अपनी समस्त ऋद्धि समृद्धि सम्पत्ति वैभव शस्त्रास्त्र सज्जित सेना के साथ कल सबेरे भगवान महावीर के दर्शन करूं, जिससे दर्शन लाभ तो मुझे मिलेगा ही, शक्ति-प्रदर्शन का लाभ भी अनायास ही मिल जाएगा। इस

अवसर पर किया गया शक्ति प्रदर्शन अप्रासांगिक भी नहीं लगेगा। आदेश मिला सबेरे सबेरे मंत्रि परिषद को पूरे शाही ठाठ बाठ और लवाज में के साथ चलना है भगवान महावीर के दर्शन के लिए सब कुछ समय पर सजधज कर तैयार हो जाना चाहिए।

राजा की सवारी नगर के मुख्य मार्गों से धीमे-धीमे आगे बढ़ रही है। मार्ग के दोनों और हजारो-हजारो नर नारी आश्चर्यचकित आंखों से राजा दशार्णभद्र के विपुल समृद्धि वैभव और अतुल सैन्यबल को देख रहे हैं। सबके चेहरे विस्मित विमुग्ध है। एक छोटे से राजा के पास इतना इतना वैभव इतनी इतनी समृद्धि इतने इतने अस्त्र-शस्त्र इतना इतना सैन्यबल। सबके होठों पर एक ही चर्चा है। अहंकार की शराब में मदहोश सजे धजे हाथी पर आसीन राजा दशार्णभद्र अपने बुद्धिकौशल पर मन ही मन फूला नहीं समा रहा था।

अचानक तभी आसमान में एक कर्ण भेदी गड़गड़ाहट हुई । न कोई बादल न घटाएं न कोई पूर्वी हवाएं न ही वर्षा का मौसम भी फिर यह गड़गड़ाहट कैसी। प्रश्नाकुल मन से जो भी नजरे उपर आसमान की ओर उठीं। वे जैसे वहां चिपक गई, नीचे वापस मुड़ने का कोई नाम ही नहीं ले रही थी।

अहं पर चोट

राजा ने सोचा यह क्या है। मेरी सवारी राज पथ पर चल रही है पर लोगों की नजरें उपर गडी है। राजा ने भी अपनी पलकें उपर उठाई। फिर एक बार जो देखा, बस आंखे फाडें देखता ही रहा। स्वर्ग के अतुल विपुल वैभव से सजा संवरा देवेंद्र आसमान से धरती पर उतरा रहा है, भगवान महावीर के समवसरण में आ रहा है। जहां तक नजरें जाती हैं ऐरावत हाथियों की अन्तहीन कतार दिखाई दे रही है। उन सर्वश्रेष्ठ ऐरावत हाथियों के अगले दोनों दांतों पर मनोरम वापियां बनी है, जो स्वर्णाभ सहस्त्र दल वाले कमल के फूलों से शोभित हो रही हैं। उन सहस्त्र दल कमलों की एक एक पंखुड़ी पर स्वर्ग की अप्सराएं बत्तीस बत्तीस प्रकार के नाटक दिखा रही है। कमल कर्णिका पर सतमंजिले महल खड़े है, जिनके झरोखों में स्वर्गीय वैभव विलास से मंडित देवांगनाएं अपनी दिव्य मुस्कान से जैसे फूल बिखेर रही हैं।

अब राजा के समझ में आया सबकी आंखे उपर ही क्यों ठहरी है। कहां एक नरेंद्र का वैभव और कहां एक देवेंद्र का वैभव। देवेंद्र को जहां चिंतन भर की देर है कि सारा वैभव हाजिर है। उसके समक्ष एक छोटे से राज्य के नरेंद्र का वैभव कैसे टिक सकता है।

फिर देवेंद्र के वैभव समृद्धि को देखने वाली आंखे नरेंद्र के वैभव को क्या देखेंगी?सारी स्थिति को भांपते राजा को देर नहीं लगी। समझ गया वह कि इंद्र की यह सारी माया प्रदर्शन उसके अपने अहं प्रदर्शन का मर्दन करने के लिए ही है। पछताने लगा मन ही मन कहां भटक गया था मैं। अवसर तो मिला था मुझे घर में दर्शन दीप जलाने का और उलझ गया मैं शक्ति वैभव के प्रदर्शन मे। इसी प्रदर्शन वृत्ति के कारण ही मुझे मुंह की खानी पडी।

महावत को आदेश दिया, घुमावदार रास्तों को छोड़ सीधे रास्ते से भगवान के समवसरण में पहुंचना है। भगवान को वंदन कर राजा यथास्थान बैठ गया। अनुभव पूत गंभीर वाणी में भगवान का अमृत प्रवचन हुआ। राजा संबोधि को प्राप्त हुआ। प्रवचन के अनन्तर भगवान से निवेदन किया, मुझे इन चरणो में स्थान देने की कृपा करें। भगवान ने उसके अर्न्तहृदय को पढ़ा और उसकी भावना को स्वीकार कर लिया।

दर्शन में प्रतिस्पर्धाओं का अन्त

अब राजा दशार्णभद्र राजर्षि बन गए। प्रदर्शन के सारे मोहावरणों को हटा कर आत्म दर्शन में स्थित हो गए। इन्द्र उपपात में आया, नमस्कार किया और बोला-उस वैभव प्रदर्शन में मैं आपसे होड़ ले सकता था, इस दर्शन की भूमिका में तो मात्र अपने प्रणाम ही निवेदन कर सकता हूं। उसमें मैंने आपको पराजित किया। किन्तु इसमें मैं स्वयं पराजित हूं।

सचमुच ही सारी होड़ें, सारी प्रतिस्पर्धाएं, प्रदशर्न के साथ ही प्रारम्भ होती है। दर्शन का उदय होते ही वे सारी होड़े प्रतिस्स्पर्धाएं हरहरा कर स्वयं बिखर जाती है। प्रदर्शन में प्रतिस्पर्धाओं का कहीं अन्त ही नहीं है। एक व्यक्ति एक कीर्तिमान स्थापित करता है कि दूसरे के द्वारा आगे बढ़ते ही वह स्वंय टूट जाता है। सच्चाई यह है कि वह कोई कीर्तिमान होता ही नहीं सिर्फ मन का भ्रम होता है। जो सच्चा कीर्तिमान होता है वह कभी टूटता नहीं। और जो टूट जाता है वह सच्चा कीर्तिमान होता नहीं। भगवान महावीर के साधना पथ में यही सम्यक् दर्शन है, जहां सारे अहं प्रदर्शन होड़ प्रतिस्पर्धाएं स्वंय विराम पा लेते हैं।

कितना अच्छा होता कम से कम जैन समाज तो भगवान महावीर के इस सम्यक दर्शन को समझ पाता। आज ऐसा लगता है कि जैन समाज दर्शन से हटकर प्रदर्शन की ओर अधिक से अधिक झुकता जा रहा है। केवल सामाजिक स्तर पर ही नहीं, धार्मिक स्तर पर भी प्रदर्शन की एक अदम्य होड लगी है। परिणाम स्वरूप महावीर की छवि भी जन मानस में उससे धूमिल हुई है।

सब जगह अपने अपने सम्प्रदायों के आग्रह हैं, सिद्धांतों और मान्यताओं और परम्पराओं के आग्रह हैं धर्म के उंचे आसन पर अपने अपने अहंकार विराजमान है, भगवान महावीर कहां हैं? सबको अपनी अपनी सम्प्रदायों परम्पराओं से प्यार है, महावीर से कहां हैं? आज आवश्यकता है माटी से ऊपर ज्योति को स्थान दिया जाये, राख से ऊपर अंगारे को स्थान दिया जाए, सम्प्रदाय से ऊपर भगवत्ता और चिन्मयता को स्थान दिया जाए। वह तभी संभव होगा, जब हम प्रदर्शनों से उपर उठकर दर्शन का दीपक अपने घर में जलाएंगे। दर्शन की ज्योति में अंधेरा टिक नहीं सकेगा। प्रदर्शन की राख के ढेर में कोयलों के सिवा और कुछ भी नहीं मिलने वाला है।

यशस्वी विदेश यात्रा के बाद स्वदेश लौटने पर साध्वी समुदाय द्वारा समुच्चारित स्वागत गीत।

गुरुदेव पधारें हैं बहारों मुस्काओ
सौभाग्य हमारे हैं स्वागत कर हर्षाओ

1) मन की मुरझाई कलियों में,जान आ गई फिर से,
जो गमगीन हुए थे चेहरे पा गुरूवर को हर्षे।

2) कैसा है तनुरत्न आपका हमको शीघ्र बताओ
नए नए अनुभव विदेश के कृपया हमें सुनाओं।

3) क्या जादू प्रभु की वाणी मे पूछ रहे जन सारे,
मधुर मधुर उपदेशों से कितने जन पार उतारे।

4) जहाँ कहीं भी नज़र आपकी पड़े धन्य वह होता,
स्नेहामृत पाकर गुरूवर का, सारी सुधबुध खोता।

5) युग-युग जीओ महामनस्वी शुभ कामना हमारी
हो निर्विघ्न पंथ आपका मिलें सफलता सारी
उम्र आपको लगे हमारी वरो सफलता भारी।

मुरझाई पौध को पानी मिल गया

○ संघ प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री

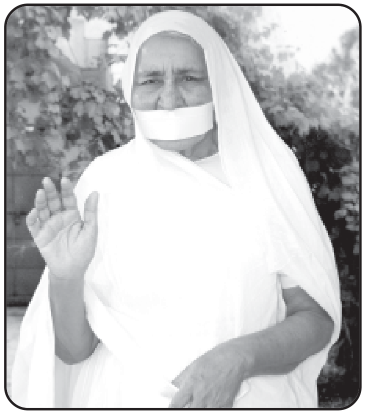

वैशाली की नगर वधू आम्रवाली ने भगवान बुद्ध के पास अपना स्नेहामंन्त्रण भेजा। राजकुमार सिद्धार्थ। जिस विश्व सुन्दरी पर दुनियां भर के राजकुमार भंवरो की तरह मंडराते है जिसकी एक मुलाकात के लिए अशर्फियों के ढ़ेर लुटाए जातें हैं जिसका स्नेहाभिलाप बड़ों-बड़ों को धन्य कर देता हैं जिसके एक काम कटाक्ष पर राजा महाराजा अपना सर्वस्व लुटा रहे हैं। जिस की मोती बिखेरती, फूल खिली मुस्कान पर योगी वियोगी भी कामातुर हो जाते हैं। उस देव कन्या के प्रति आपका यह औदासौन्य? उस परीलोक की अप्सरा से आपका इतना परहेज? कि पास आना तो दूर आंख उठा कर देखना भी पाप।

आम्रपाली के महल के पास से गुजरते हुए भगवान बुद्ध ने उस के भ्रम को तोड़ते हुए कहा-देवी ! अभी तुम्हें तथागत की जरूरत नहीं है जिस दिन तुम्हें जरूरत होगी, तथागत दौड़े आएंगे। आम्रपाली नहीं समझ सकी। बुद्ध ने दूसरी बार कहला भेजा! भद्रा अभी तुम्हारे पास यौवन का नशा है। सौंदर्य का अखूट साम्राज्य है। वैभव का ढेर है। तुम्हें अपना कहने वाले हजारों लाखों राजकुमार और श्रेष्ठि पुत्र हैं। गगन चूमती मीनारों में तुम्हारा प्रवास है। एयर कन्डीशन से घरों में तुम्हारी सैर है। रेशमी लिबास में लिपटी बाग बगीचों में घूमने वाली महारानी को कहां फुर्सत है एक अकिंचन से मिलने की जिस दिन तुम्हारा सब कुछ चूक जाएगा। उस दिन तुम्हें यथागत की सही माने में जरूरत होगी। उस दिन यह धर्मदूत तुम्हें संभाल लेगा। आम्रपाली आश्वस्त हुई तथागत अपने लक्ष्य की ओर अबाध गति से बढ़ रहे थे। समय की सूइयां सरकती गई। युग बदल गया वेदना से कराहती आम्रपाली की झुग्गी झोंपड़ी पर किसी अभ्यागत ने दस्तक दी। मदहोश जवानी पर जरा जीर्ण बुढापे ने हमला कर दिया था। जिस सौंदर्य पर लाखों लाखों राजकुमार न्यौछावर होते थे। उस पर मक्खियां भिन भिना रही थी। जहां बड़े बड़े लोगों की भीड़ जमा रहती थी वहां दर्द भरी पुकार सुनने वाला भी कोई नहीं है।

जहां सजावट सुविधा सामग्री का ढेर लगा हुआ था वहां गंदगी और कचरे को बुहारने वाला कोई नहीं है। सम्पन्नता विपन्नता में बदल गई। आशा, निराशा में परिणत हो गई। जीवन भारभूत लगने लग गया। कोई खिलाने वाला नहीं, सहारा दे कर उठाने वाला नहीं, मन बहलाव की तो बात ही कहां ? उन धूल भरे क्षणों में कब दम घुट जाए कुछ पता नहीं। भगवान बुद्ध ने कहा-आंखे खोलो आम्रपाली। तुम्हारा चिर निर्मन्त्रित अतिथि तुम्हारे द्वार पर खड़ा है। यही वह समय है जब तुम्हें मेरी जरूरत हैं जिसका कोई नहीं है उस का धर्म है जिस समय मनुष्य सब और से आश्रय हीन हो जाता है तब धर्म व्यक्ति को आधार देता है। त्राण और शरण बनता है। अमंगल में मंगल को करने वाला दीनों पर दया करने वाला एक मात्र धर्म ही है।

प्रकृति का रथ निर्यामक गति से चलता है यह सब धर्म की ही प्रेरणा हैं। जहां धर्म का लोप हो जाता है वहां न तो समाज पर मेघ बरसता है न सूरज, चन्द्रमा उदित होते है यह निराधार पृथ्वी धर्म के ही आधार पर टिकी हुई है। धर्म ही बांधव हीन का बांधव असहायों का सहाय है। धर्म की निश्छल और अखंड आराधना करने वालों के लिए भयानक जंगल मन मोहक नगर बन जाता है, अग्नि का पानी हो जाता है। लहलहाता समुद्र टापू बन जाता है धर्म की महिमा अपरंपार है। आम्रपाली संसार के स्वरूप को अच्छी तरह देख चुकी थी। अब धर्म की शरण में आकर धर्म की महिमा का बोध करना चाहती थी। धर्म और बुद्ध की शरण में आते ही आम्रपाली का उजड़ा जीवन आबाद हो गया। मुरझाई पौध को पानी मिल गया।

व्यक्ति के अंतर्मन को परखना चाहिए।

-दशवैकालिक

शरीर और मन साथ ही साथ उन्नत होने चाहिए।

-विवेकानंद

एक बुराई दूसरी बुराई से उत्पन्न होती है।

-टेरेंस

यदि मनुष्य प्रतीक्षा करे तो हर वस्तु प्राप्त हो जाती है।

-डिजरायली

आचार्यश्री रूपचन्द्रः एक बहुआयामी व्यक्तित्व

भारत की आध्यात्मिक विभूतियों में एक नाम है पूज्य गुरूदेव आचार्य श्री रूपचन्द्र जी महाराज जिन्होंने भारतीय संस्कृति धर्म समन्वय तथा साधना सेवा के शाश्वत मूल्यों को न केवल भारत में किंतु अमेरिका, कनाड़ा, इग्लैंड आदि देशों में प्रसारित करके संपूर्ण आध्यात्मिक जगत में अपनी एक विशिष्ट पहचान स्थापित की है। दिनांक 22 सिंतबर 1939 को आपका जन्म सरदार शहर राजस्थान में हुआ। आपके पिताश्री का नाम श्रीमान करूणा, मनीषी की पारमिता दृष्टि तथा प्रेम सेवा की निर्मलधारा विविध रूपों में प्रवाहित होती रही है।

लगभग तेरह वर्ष की उम्र में आपकी मुनि दीक्षा महान् यशस्वी युग-प्रधान आचार्य श्री तुलसी के कर कमलों से सरदार शहर मे ही संपन्न हुई। आप उस समय आठवीं कक्षा के छात्र थे। दीक्षा के पश्चात आपने संस्कृत, पाकृत, इंगलिश, हिन्दी, गुजराती आदि भाषओं के साथ-साथ साहित्य दर्शन, विज्ञान, मनोविज्ञान तथा विश्व धर्मों का तुलनात्मक अध्ययन किया। भगवान महावीर की वाणी, वेद-उपनिषद, भगवत्-गीता रामचरित्र मानस बुद्धवाणी बाइबिल आदि धर्म ग्रंथों के हजारों पद आपकी स्मृति में कम्प्यूटर की तरह अंकित है।

अपने जन जागरण अभियान में आपने संपूर्ण भारत तथा नेपाल में लगभग पचास हजार किलोमीटर की पद-यात्राएं करके मानव धर्म के सार सूत्रों को घर-घर में पहुंचाने का भागीरथ प्रयत्न किया है। इस संदर्भ में आपके सान्निध्य में होने वाले आयोजनों समारोहों एवं संगोष्ठियों में देश के शीर्षस्थ राजनेता-गण जैसे महामहिम राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह, श्री वेंकटरामण, डॉ.शंकरदयाल शर्मा, तथा प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी श्री मोरारजी देसाई, श्री राजीव गांधी एवं नेपाल के प्रधानमंत्री श्री मातृकाप्रसाद कोइराला आदि के साथ-साथ अनेक केन्द्रीय मंत्री तथा अन्य मंत्री गण समय समय पर भाग लेते रहे हैं।

राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह और डा.शंकर दयाल शर्मा तो आपकी साहित्यिक कृतियों विशेषतःकविता साहित्य के दीवाने रहे है, और आपकी अनेक पुस्तकों का लोकार्पण आप दोनों के हाथों से हुआ है।

विश्व विख्यात आदरणीय आचार्य श्री तुलसी के आप प्रियतम शिष्य रहे ही है, इसके साथ ही महान दार्शनिक जे.कृष्णमूर्ति, पांडीचरी अरविंद आश्रम की श्री आनंदमयी मां, ओशो रजनीश, बौद्ध धर्म-नेता श्री दलाई लामा श्री बिनोबा भावे, श्री गोपीनाथ कविराज, सेवा मूर्ति मदर टेरेसा, विपश्यना आचार्य श्री गोयनका, आचार्य सुशील मुनि आदि के साथ आपका निकट संपर्क तथा अत्यंत आत्मीय वातावरण में साधना सेवा परक विषयों पर विचार विनिमय होता रहा है।

भारत की साहित्य सम्पदा की श्री वृद्धि में भी आपका महत्वपूर्ण अवदान है। गद्य एवं पद्य साहित्य में आपकी दो दर्जन कृतियां अब तक प्रकाशित हो चुकी है। उन पुस्तकों में सुना है मैंने आयुष्मन, मैं कहता आंखन देखी,महावीर मार्क्स और गांधी, अहिंसा है जीवन का सौंदर्य विचार प्रधान गद्य संग्रह देश विदेश में बहुत लोकप्रिय हुए है। साहित्य जगत ने आपके विचार प्रधान गद्य साहित्य तथा क्रांति धर्मी काव्य साहित्य की मुक्त कंठ से सराहना की है। आपकी अहिंसा विषयक पुस्तक के संदर्भ में सुप्रसिद्ध साहित्यकार अमृता प्रीतम लिखती है-मुनि रूपचन्द की आस्था जिस तरह अहिस्ता-अहिस्ता अपने अक्षरों से अहिंसा के रहस्य को खोलती है, हर रज-कण में उतरती हैं, हर जलजल कण में भीगती है, प्रलय और विनाश के अंतर को दिखाती हैं, तो कह सकती हूं कि मुनिजी की आस्था ने सचमुच वह अग्नि-स्नान किया है, जिससे वह भय मुक्त, सीमा-मुक्त और काल मुक्त हो पाई है।समाचार जगत में दैनिक साप्ताहिक पाक्षिक राष्ट्रीय पत्र पत्रिकाओं में आपकी रचनाएं निरंतर प्रकाशित होती रही है। आकाश-वाणी तथा दूर-दर्शन से भी समय-समय पर आपके आलेख, वार्ताएं, तथा कविताएं प्रसारित होती रही हैं। आपकी अनेकों रचनाओं का अनुवाद अंग्रेजी, बंगला, कन्नड, तमिल, नेपाली, पंजाबी, गुजराती आदि विभिन्न भाषाओं में हुआ है।

<u>विदेश की धरती पर धर्म का संदेश</u>

विदेश की धरती से भावभरे आमंत्रण पर आपने जैन मुनि की मर्यादाओं को विस्तार देते हुए अमेरिका, कनाडा, और इंग्लैंड आदि देशों में जैन धर्म भारतीय संस्कृति एवं आध्यात्मिक मूल्यों के प्रशिक्षण की दृष्टि से अनेक बार विदेश यात्राएं की है। इन यात्राओं में आपकी आत्म स्पर्शी प्रवचन वाणी से जहां हजारों की संख्या में प्रवासी भारतीय अपनी यात्राएं की है। इन यात्राओं में आपकी आत्म स्पर्शी प्रवचन वाणी से जहां हजारों की संख्या में प्रवासी भारतीय अपनी संस्कृति और धर्म पर सुदृढे हुए हैं, वहां अनेक विदेशी भाई-बहनों ने अहिंसा तथा शाकाहार का पथ अपनाया है। वे योग ध्यान अभ्यास कर रहे हैं।

आचार्यवर के जीवन से जुड़ी महत्वपूर्ण उपलब्धियां आंकडो में इस प्रकार है-

- तेरह वर्ष की उम्र में 15 अक्टूबर 1952 को महान् यशस्वी आचार्य श्री तुलसी के कर कमलों से तेरापंथ संप्रदाय में जैन मुनि दीक्षा।
- आवश्यक सूत्र, दशवैकालिक, उत्तराध्ययन-सूत्र, आचारांग-प्रथम' प्रश्न व्याकरण 'संवर-द्वार' वृहत्कल्प सूत्र तत्तवार्थ सूत्र आदि आगम कंठस्थ।

- शांत सुधारस, श्री भक्तामर स्तोत्र, श्री कल्याण मंदिर, रत्नाकर पंचविशिका, अयोग व्यवच्छेदिका, अन्ययोग-यवच्छदिका, षड्-दर्शन-समुच्चय आदि जैन रचनाओं के साथ साथ पतंजलि योग-दर्शन, श्रीमद् भगवत्गीता, उपनिषदों आदि के सैंकडों पद कंठस्थ।
- संस्कृत-विद्याध्ययन में लघु कौमुदी, अष्टाध्यायी श्री अभिधान चिंतामणि कोश तथा प्राकृत व्याकरण आदि कंठस्थ। तेरापंथ शिक्षा प्रणाल की योग्यतम एम.ए के समकक्ष परीक्षा में प्रथम।
- संस्कृत, प्राकृत, इंग्लिश, हिन्दी, गुजराती, राजस्थानी आदि भाषाओं के साथ साथ धर्म, दर्शन सिद्धांत मनोविज्ञान तथा साहित्य का तलस्पर्शी अध्ययन।
- अग्रण्य पद-सितंबर 1964 में आचार्य श्री तुलसी द्वारा।
- आचार्य पद-22 सितम्बर-1999, दिल्ली जैन संघ द्वारा।
- सम्मान-प्रज्ञा-पुरूष-1990 कोलकाता समाज द्वारा।
- मेन आफ द ई.सन.2004 बाइअमेरिकन बायोग्राफिकल इंस्टीट्यूट नार्थ केरोलिना यू.एस.ए.। साहित्य सृजन-धर्म दर्शन और काव्य साहित्य पर दो दर्जन पुस्तकें प्रकाशित। अनेक पुस्तकें देश-विदेश में अत्यंत लोकप्रिय।

पद यात्राएं संपूर्ण भारत और नेपाल में करीब पचास हजार किलोमीटर की पद-यात्राएं। विराटनगर नेपाल चातुर्मास 1976 में आपके विचारों कार्यक्रमों से प्रभावित होकर नेपाल महाराजा श्री वीरेंद्र वीर विक्रम शाह देव द्वारा अपने मुख्य सचिव श्री रंजनराज खनाले के माध्यम से राजधानी काठमांडू पदार्पण की प्रार्थना। विदेश यात्रा सन् 1991 में अमेरिकन समाज की भाव भीनी प्रार्थना पर ज्ञान-दर्शन चरित्र की विशिष्ट आराधना की संभावना को देखते हुए विदेश यात्रा का निर्णय। इन विदेश यात्राओं से हजारों व्यक्ति सुलभ बोधि बने हैं, हजारों व्यक्ति सम्यक्त्व पर सुदृढ़ हुए हैं तथा हजारों श्रावकत्व की भूमिका पर आरूढ हुए है। आपके सान्निध्य में पर्युषण दश लक्षण आराधना में विदेश्की धरती पर आज तक हजारों अठाई तप कई मासखमण तथा अनगिन तेले संपन्न हुए हैं। न्यूजर्सी, न्यूयार्क, शिकागो, हयुष्टन, सेनफांसिको, पीटसबर्ग, आदि महानगरों में आयोजित जैन कन्वेंशनों में आपश्री द्वारा हृदय स्पर्शी उद्बोधन। अमेरिकन समाज द्वारा आयोजित धर्म-प्रसार यात्रा 1999 में एक सप्ताह में अमेरिका के सभी प्रमुख महानगरों में जैन धर्म का प्रतिनिधित्व करते हुए परमार्थ आश्रम. ऋषिकेश के प्रमुख स्वामी चिदानंद सरस्वती सुप्रसिद्ध गायक श्रीमती अनुराधा पौड़वाल आदि की सहभागित। सन् 1996 में संयुक्त राष्ट्र संघ न्यूयार्क में एन.

जी.ओ. विभाग द्वारा आयोजित त्रि-दिवसीय विश्व शांति सेमिनार तथा सर्व धर्म प्रार्थना सभा में जैने धर्म का प्रभावशाली प्रतिनिधित्व। इस आयोजन में पूरे संसार की करीब एक हजार धर्म-संस्थाओं ने भाग लिया।

साधना और सेवा कार्यों को बल देने के लिए सन् 1997 में हयुष्टन टेक्सास में इंटरनेशनल मानव मंदिर मिशन की स्थापना। 'जैन वे आफ लाइफ' शाकाहार, जीव-दया, योग-ध्यान पर अमेरिका, कनाड़ा, इंग्लैंड आदि विदेशों में अनेक शिविर सेमिनार प्रवचन मालाएं तथा कार्य-शालाएं आपके मार्ग-दर्शन में आयोजित हुई है। भारत सरकार द्वारा आयोजित सिंधु दर्शन समारोह 2003 के अवसर पर लेह लद्दाख में विश्व धर्म संगम में आपने ही जैन धर्म का प्रतिनिधित्व किया। इस संगम में शंकराचार्य, बौ0 धर्म लद्दाख के प्रमुख विख्यात संत पुरूष, क्रिश्चियन, इस्लाम धर्म के प्रमुखों की उपस्थिति के साथ-साथ भारत सरकार के उपप्रधान मंत्री श्री आडवाणी, दर्जन भर केंद्रीय मंत्री गण, जम्मू कश्मीर के मुख्यमंत्री आदि भी सम्मिलित।

विश्व मैत्री तथा विश्व शांति की मंगल भावना से प्रेरित कैलाश अष्टापद मानसरोवर यात्रा 2003 जुलाई में आपश्री द्वारा भगवान ऋषभदेव प्रथम तीर्थंकर की निर्वाण भूमि की तीर्थ यात्रा। इस यात्रा में कारब पैंतीस अमेरिकन तथा अंग्रेज श्रद्धालु, करीब एक सौ एन. आर.आई. सहित करीब दो सो तीर्थ यात्री सम्मिलित थे। इस पावन यात्रा को आपश्री सहित भानुपूरा पीठ के शंकराचार्य स्वामी दिव्यानंद तीर्थ, परमार्थ आश्रम, ऋषिकेश के प्रमुख स्वामी चिदानंद सरस्वती मुनिजी सुप्रसिद्ध भागवत कथाकार श्री किशोरजी व्यास, श्री रसायनी बाबा आदि द्वारा आध्यात्मिक मार्ग-दर्शन।

14 जुलाई 2003 का दिन जैन इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा जाएगा जब आचार्य श्री रूपचन्द जी महाराज ने कैलाश अष्टापद की पाचन तीर्थ भूमिपर सैंकड़ों देश विदेश के तीथ यात्रियों के बीच जैन ध्वज लहराते हुए श्री नवकार महामंत्र, श्री भक्तामर स्तोत्र तथा आदिनाथ भगवान की आरती के साथ तीर्थ वंदना की। प्राचीन उल्लेखों के अनुसार प्रथम गणधर श्री इन्द्रभूति गौतम ने अपने मंत्र बल से इस तीर्थ भूमि पर भगवान आदिनाथ की वंदना स्तुति की थी। हमारी जानकारी के अनुसार उसके पश्चात् संभवतः आप प्रथम जैन मुनि आचार्य हैं जिन्होंने यंत्र बल के सहारे भगवान ऋषभदेव की निर्वाण भूमि की तीर्थ यात्रा की। टी.वी चैनल संस्कार ने आज तक सैंकड़ों बार आचार्य श्री को जैन ध्वज के साथ श्री नवकार महामंत्र का संगान करते हुए कैलाश अष्टापद की तीर्थ भूमि पर दिखलाया है।

यह तीर्थ संपूर्ण जैन समाज के इतिहास की गौरवपूर्ण घटना है।

तेरापंथ संप्रदाय की अंतरंग राजनीति से असहमति के कारण दिसंबर 1981 में करीब इक्कीस साधु साध्वियोंके साथ जयपुर मे नव तेरापंथ की स्थापना की। नव-तेरापंथ की स्थापना के समय साध्वियों का नेतृत्व साध्वी श्री मंजुला श्री जी ने किया। साध्वीश्री जी को कुछ समय पश्चात संघ ने प्रवर्तिनी पद पर बिराजमान किया। श्रावक समाज की प्रतिनिधि संस्था का नाम जैन संगम रखा गया। उपाश्रय स्थानक अथवा भवन का नाम मानव मंदिर रखा गया। कालांतर में जैन एकता को मजबूत करने के उद्देश्य से नव तेरापंथ शब्द का विलीनीकरण जैन शासन में कर दिया गया। इसी प्रकार समाज की प्रतिनिधि संस्था का नाम मानव मंदिर मिशन कर दिया। वर्तमान में इस जैन संघ में ग्यारह साधु साध्वियों सात साधक साधिकाएं तथा हजारों श्रावक श्राविकाऐं हैं। इस संघ का विहार क्षेत्र प्रमुखतः दिल्ली, राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, उत्तरप्रदेश, उत्तराखण्ड, कोलकात्ता, मुंबई तथा गुजरात है। विदेशों में अमेरिका कनाडा और इंग्लैंड तथा नेपाल है।

<u>साधना सेवा का संगम</u>

अध्यात्म साधना के साथ मानव सेवा भी जुड़े, इस विचार पर आपने सदैव बल दिया है। यही कारण है कि भारत की राजधानी दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, आदि प्रांतों मेंआप द्वार संचालित मानव मंदिर केन्द्रों में प्रवचन,सत्संग,ध्यान,योगासन, के साथ साथमानव सेवा के प्रकल्प भी चल रहे हैं। दिल्ली केंद्र में अनाथ बेसहारा बच्चों का गुरूकुल है जिसमें असहाय बालकों के आवास,भोजन,शिक्षा,वस्त्र तथा चिकित्सा आदि की उत्तमव्यवस्था है। इन बच्चों को स्कूली शिक्षा के अलावा योगासन ध्यान तथा ऊंचे संस्कारों की शिक्षा भी दी जाती है। इसी तरह दिल्ली में प्राकृतिक चिकित्सा योग तथा आयुर्वेदिक सेंटर भी सेवारत है। हिसार केंद्र में गरीब-स्त्रियों के लिए सिलाई सेंटर तथा निःशुल्क होम्योपैथिक औषघालय चल रहा है। आपके व्यापक विचारों का प्रतिनिधित्व करने वाली मासिक पत्रिका रूपरेखा का भी नियमित प्रकाशन होता है।

आपके मिशन को सफल बनाने में महान विदूषी पूज्या साध्वी श्री मंजुला श्री जी महाराज का मणि कंचन संयोग है। इसके साथ साथ सरलमना साध्वी श्री मंजुश्री आदि धर्म संघ के सदस्य अध्यात्म चेतना तथा जन जागरण के कार्य को पूरी निष्ठा से आगे बढ़ा रहे हैं। देश विदेश के मानव समाज को आपके इस मिशन से बहुत आशाएं है।

प्रस्तुति- योगाचार्य अरूण तिवारी

पूज्य गुरूदेवश्री के सत्तरवें वर्ष प्रवेश पर विशेष कविता

संघप्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री

तेरह वसन्त होते होते जीवन में नया विकास किया।
घर की सीमा से बाहर आ निजहित परहित, संन्यास लिया।

1) किसने सोचा यह शिशु जाएगा सात समुद्रों पार कभी।
भारत की पावन संस्कृति का सन्देश सुनेगा विश्व सभी।।
अष्टापद मानसरोवर पर जा जैन ध्वज फहराएगा।
लद्दाख लेह की यात्राओं का नव इतिहास बनाएगा।।
जिस ओर बढ़े ये कदम वहां की जनता ने सम्मान दिया।।।

2) हे सरस्वती के वरद पुत्र! तेरा हर अक्षर महाकाव्य।
अनुभव से निकला एक-एक मुक्तक है कितना नव्य भव्य।।
तुम जन्म जात हो शांतिप्रिय संघर्ष विवाद न किया कभी।
तूफान अनेकों आए हैं पर सहज भाव से सहे सभी।।
कितनी उदारता है तुम में बांटा हैं अमृत गरल पिया।।।

3) तुम हो निष्काम और निस्पृह महत्त्वाकांक्षाएं कभी न थी।
दुर्लभ है ऐसा संत जगत में किसी विषय की कमी न थी।।
कर दिया किसी ने भला बुरा कब राग रोष करते देखा।
इसका ही नाम साधुता है, शब्दों में कैसा हो लेखा।।
ऐसा निर्लिप्त और निर्मल-पावन जीवन ही सदा जिया।।।

4) यह जन्म जयन्ती सत्तरवीं हम मना रहे सोत्साह प्रभो।
इस पावन अवसर पर तुम को दे रहे बधाई सभी विभो।।
युग-युग नेतृत्व तुम्हारा हमको देते रहना है ऋषिवर आशीर्वर।
आशीर्वर मिलता रहे सदा सान्निध्य तुम्हारा अति सुखकर।।
क्या कला तुम्हारे में अद्भुत है फटे दिलों को सदासिया।।।

शांति की पराकाष्ठा

○ सरलमना साध्वी मंजुश्री

भारत देश सदा से संतों-महात्माओं का देश रहा है। यहां के हर प्रांत में प्रांत के हर गांव में कोई न कोई संत अवश्य पैदा हुआ है। इन संत महात्माओं के तप, त्याग से ही देश विश्व का गुरू रहा है। उन महान संत महात्माओं की श्रेणी में एक नाम है संत तुकाराम का। संत तुकाराम-स्वभाव के बडे शांत थे। एक बार वे एक पेड़ के नीचे सो रहे थे। लगातार कई दिनों से भोजन न मिलने से भूखे थे। सो भूखे पेट नींद नहीं आ रही थी। एक किसान वहां से गुजर रहा था उसके पास काफी गन्ने थे। उसने कुछ गन्ने संत तुकाराम को दिये! गन्ने लेकर संत घर की ओर चले तो रास्ते में उन्हें एक भिखारी मिल गया गन्ने को देखकर उसने संत के आगे हाथ फैला दिया। संत तुकाराम ने दो गन्ने भिखारी को दे दिये। फिर आगे चले तो स्कूल से आते छोटे छोटे बच्चे मिल गये।

बच्चों ने कहा-बाबा गन्ने हमें दे दो। बाबा ने एक गन्ना रखकर और सब गन्ने बच्चों को दे दिए। संत तुकाराम बचा हुआ एक गन्ना लेकर घर आये। घर आते ही उनकी पत्नी ने पूछा आज तुम्हें ऐसा कौन दातारमिल गया जिसने एक गन्ना दान में दिया है। संत तुकाराम ने शांत भाव से कहा-नहीं देवी! देने वालों ने तो बहुत गन्ने दिये थे। पत्नी ने कहा-तो फिर कहां गये सारे गन्ने? संत तुकाराम ने कहा-रास्ते में मुझे एक भिखारी व कुछ बच्चे मिल गये थे। सो गन्ने मैंने उन्हे दे दिया।

कच्चे दिमागों में जहर भरने की कोशिश न करें,
मजहब की पागल लहर भरने की कोशिश न करें,
यह दिमाग जैसे फूलों से महकता हुआ चमन,
इसमें एक गंदा शहर भरने की कोशिश न करें।

-आचार्य रूपचन्द

जन्मोत्सव पर विनयांजलि

विनय देवबन्दी

प्रज्ञा पुरूष मुनि रूप जय जय रूप मुनि
जिन आगम की धूप, जय-जय रूप मुनि
चिंतन बड़ा अनूप जय-जय रूप मुनि
प्रज्ञा पुरूष मुनि रूप,जय-जय रूप मुनि

(1)

बाईस सिंतम्बर सन उन्तालिस पुण्यालोक प्रकटाया था
राजस्थानी शौर्य-धरा पर, देव-दूत बन आया था।
चुरू,जनपद,सरदार शहर में, चहुँ-दिश आनंद छाया था।
मात-पिता,परि-पुरजन ने भी, मंगल-हर्ष मनाया था।
खुशियां चारों ओर, जय-जय रूप मुनि,
नाच उठा मन-मोर, जय-जय रूप मुनि,
मन में उठी हिलोर, जय-जय रूप मुनि,
प्रज्ञा पुरुष मुनि रूप, जय-जय रूप मुनि.......

(2)

तेरह वर्ष की आयु में ही, जिनमत दीक्षा पाई थी।
खेल खिलौनों की दुनियां को, पल-भर में बिसराई थी।
नाते-रिश्ते कुटम्ब कबीला, सारे रिश्ते ठुकराए।
मोह ममत्व के बंधन तोड़े, शिव पथ पर पग बढ़ जाए
छोड़ा घर-परिवार, जय-जय रूप मुनि,
संयम लीना धार, जय-जय रूप मुनि,
गूंजे जय जयकार, जय-जय रूप मुनि,
प्रज्ञा-पुरुष मुनि रूप, जय-जय मुनि रूप.........

(3)

संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी, इंगलिश, राजस्थानी, गुजराती।
अन्य अनेकों भाषाओं की मुनि रूपचंद हैं थाती।
जिन आगम में गहरे डूबे, सब धर्मों का मनन किया।
सार-तत्व को समझा जाना,फिर जन-जन में बांट दिया।
सरल सहज उद्‌बोध, जय-जय रूप मुनि,
सब धर्मों का शोध, जय-जय रूप मुनि,
जन-जन का अनुरोध, जय-जय रूप मुनि,
प्रज्ञा पुरुष मुनि रूप, जय-जय रूप मुनि........

(4)

पचास हजार किलोमीटर की, पद-यात्राएं सुखद रही।
जो भी अनुभव किया हृदय ने वो ही सबसे बात कही।
अमेरिका इंग्लैंड, कनाड़ा, दूर विदेशों में जाकर।
महावीर की धर्म-देशना सारे जग में फैला कर।
किया बहुत उपकार, जय-जय रूप मुनि,
मानव-धर्म-प्रचार, जय-जय रूप मुनि,
मानवता का सार, जय-जय रूप मुनि,
प्रज्ञा पुरुष मुनि रूप, जय-जय रूप मुनि........

(5)

सिद्धहस्त-चिंतक, लेखक, कवि, सप्त-स्वरों के स्वामी हैं।
कृतियां अनेकों हुई प्रकाशित, चिंतन की अनुगामी हैं।
अंग्रेजी, बंगला, कन्नड़ में कृतियों का अनुवाद हुआ।
गुजराती, पंजाबी, तमिल में कृतियों का गुणगान हुआ।
बहती करूणा धार, जय-जय रूप मुनि,
जन-हित सदा उदार, जय-जय रूप मुनि,
मनवा रहा पुकार, जय-जय रूप मुनि,
प्रज्ञा-पुरुष मुनि रूप, जय-जय रूप मुनि........

(6)

दीन-हीन की दशा देखकर, करूणा सिंधु लहराया।
फटेहाल बचपन को देखा, देख देख मन भर आया।
कैसे उनकी दशा सुधारें? यही ख्याल मन में आया।
'मानव मंदिर मिशन' बनाकर, ख्याल को सच कर दिखलाया।
बचपन हुआ सनाथ, जय-जय रूप मुनि,
अब न रहा अनाथ, जय-जय रूप मुनि,
सर पर रूप का हाथ, जय-जय रूप मुनि,
प्रज्ञा-पुरूष मुनि रूप,जय-जय रूप मुनि.........

(7)

सद्-शिक्षा के द्वारा बच्चे, संस्कार-युत होते हैं।
ध्यान, साधना, योग, जाप से, मन विकार खुद खोते हैं।
शिक्षा-दीक्षा,संग चिकित्सा,सदा स्वस्थ सब कहते हैं।
सब धर्मों का संगम है ये, सभी धर्म यह कहते हैं।
यमुना-तट के तीर, जय-जय रूप मुनि,
मानवता का पीर, ,जय-जय रूप मुनि,
पी मिटती है पीर, जय-जय रूप मुनि,
प्रज्ञा पुरूष मुनि रूप, जय-जय रूप मुनि.......

(8)

हिन्दू-मुस्लिम, सिख, ईसाई, सब धर्मों के फूल खिलें।
'मानव मंदिर मिशन' में देखों, सभी धर्म अनुकूल मिलें।
समता, समन्वय, सदाचार की, उन्नत-फसलें लहलाती।
संस्कार, संयम, अनुशासन, की हरियाली मन भाती।
मानवता से प्रीत, जय-जय रूप मुनि,
मानवता मन-मीत, जय-जय रूप मुनि,
मानवता के गीत, जय-जय रूप मुनि,
प्रज्ञा-पुरूष मुनि रूप, जय-जय रूप मुनि.......

(9)

हरियाणा, पंजाब में भी हैं, मानव मंदिर संचालन।
हिसार नगरी, सुनाम मण्डी-केन्द्र बने हैं मन-भावन।
मानव-मंदिर की खुशबू से वे भी क्षेत्र सुवासित हैं।
रूपचन्द्र मुनिवर सपनों की, भाषा यूँ परिभाषित हैं।
जय-जय रूप मुनि
जय-जय रूप मुनि
जय-जय रूप मुनि
प्रज्ञा-पुरूष मुनि रूप, जय-जय रूप मुनि.......

(10)

साधना संग ही सेवा भी हो, जीवन उन्नत बन जाता।
ऐसे साधकों का ही जग में, कर्म चँदौवा तन जाता।
सबको सुख देने वाला ही जग में मसीहा कहलाता।
जग विष पीकर भोला शंकर 'नीलकंठ' है बन जाता।
विष-पी निखरा रूप, जय-जय रूप मुनि,
रूप बना, अति रूप, जय-जय रूप मुनि,
पाया आत्म-स्वरूप, जय-जय रूप मुनि,
प्रज्ञा-पुरूष मुनि रूप, जय-जय रूप मुनि......

(11)

संघ प्रवर्तिनी, महासाध्वी, मंजुला श्री जी निर्देशन।
मानव बना रहे बस मानव, रहे सदा ही मन चेतन।
मॉ-सम सब पर प्यार लुटाती, मां सी डाट लगाती है।
सभी साध्वी पग-पग पल-पल, बढ़-बढ़ हाथ बंटाती है।
सेवा है सुख-मूल, जय-जय रूप मुनि,
सेवा है सुख-कूल, जय-जय रूप मुनि,
खिलते सेवा-फूल, जय-जय रूप मुनि,
प्रज्ञा पुरूष मनु रूप, जय-जय रूप मुनि......

(12)

आचार्य श्री रूपचन्द्र जी, मानवता के रखवाले।
कुटियों में भी बांट रहे हैं, खील-बताशे, उजियाले।
देश-विदेशों से श्रद्धा आ, चरणन शीश नवाती है।
'मानव मंदिर मिशन' से जुड़ कर, सहभागी बन जाती है।
सभी करें अवदान, जय-जय रूप मुनि,
दीन-हीन कल्याण, जय-जय रूप मुनि,
'विनय' वान गुणखान, जय-जय रूप मुनि,
प्रज्ञा पुरूष मुनि रूप, जय-जय रूप मुनि......

(13)

उनहत्तरवीं जनम-जयंती, लाखों-लाख बधाई हो।
'मानव मंदिर मिशन की सेवा, रातो-रात सवाई हो।
मंजुला श्री संग, सभी साध्वी, गुरू गुण मंगल गान करें
श्रद्धा भक्ति चरण पखारे,'विनय'-वंदना दान करें।
जिये हजारों साल, जय-जय रूप मुनि,
जिन शासन के भाल, जय-जय रूप मुनि,
जलती रहे मशाल, जय-जय रूप मुनि,
प्रज्ञा पुरूष मुनि रूप, जय जय रूप मुनि....

श्रद्धावनत-
जैन 'विनय' देवबन्दी
(अन्तर्राष्ट्रीय कवि-गीतकार)
गजियाबाद

पूज्य आचार्य श्री रूपचन्दजी के सानिन्ध्य में हयुष्टन, टेक्सास अमेरिका में आत्म भीने वातावरण में पर्युषण महापर्व की आराधना।

करीब तीन वर्षो के पश्चात् इस बार पूज्य गुरूदेव आचार्यश्री रूपचन्द्र जी का अमेरिका यात्रा का कार्यक्रम बना। इस विदेश यात्रा में प्रमुख निमित्त ह्युष्टन समाज बना, जिसकी भाव भीनी प्रार्थना पर पूज्यवर ने पर्युषण महावर्प की आराधना ह्युष्टन टेक्सास में करने का निर्णय लिया।

वैसे आप सबको ज्ञात है ही कि स्वास्थ्य की अनुकूलता न होने के कारण पूज्यवर ने सन् 2005 के बाद विदेश यात्रा स्थगित कर दी थी। इस बार अमेरिकन श्रावक समाज, उसमें भी प्रमुखतःह्युष्टन जैन सेंटर की विशेष विनती रही कि चाहे अल्प समय के लिये भी आप अमेरिका अवश्य पधारें। पर्युषण-आराधना को प्रमुख लक्ष्य में रखते हुए पूज्यवर 21 अगस्त को न्यूयार्क पधारे। प्लेन में विमान-परिचारक, परिचारिकाओं को पूज्यवर के बारे में जब पता चला तो अवकाश के क्षणों में लाला राजीव, हरिराम, साजदा रमा भोसले आदि अनेकों ने पूज्यवर के सत्संग भजन का लाभ लिया। हजारों फुट ऊंचे उडान भरते विमान में भजन धर्म चर्चा का प्रसंग अपने में अनूठा था।

न्यूयार्क में तीन दिनों के विश्राम के बाद पूज्यवर 25 अगस्त को ह्युष्टन पधार गए, जहां 27अगस्त से चार सितम्बर तक पर्युषण आराधना के आध्यात्मिक कार्यक्रम पूज्यवर के सान्निध्य में चले। इस अवधि में प्रातःकालीन प्रवचन श्री कल्प सूत्र के आधार पर हुए, वहां रात्रिकालीन प्रवचन-पर्युषण पर्व भाद्रव मास में क्यों? 2. भगवान महावीर की प्रथम देशना 3.जैन दर्शन में ईश्वर की अवधारणा 4. आत्मा का अस्तित्व 5. क्या हम सचमुच मोक्ष चाहते हैं? 6. मोक्ष के चार-मार्ग-दान, शील, तप और भावना 7. साधना में तप और क्षमा का महत्व आदि विषयों पर पूज्य गुरूदेवके आत्म-स्पर्शी सारगर्भित प्रवचन हुए। लघु कथानकों और कविता मुक्तकों के माध्यम से गंभीर शास्त्रीय विषयों को सरल और सुबोध बनाने की आपकी प्रवचन शैली ने उपस्थित जन समुदाय को आध्यात्मिक रस से सराबोर कर दिया। कार्य दिवसों में सैंकड़ों तथा रविवारीय कार्यक्रम में करीब एक हजार श्रोताओं की उपस्थिति विशेष उल्लेखनीय रही। लगभग बीस युवक-युवतियों ने अठाई तप की अराधना की। अनगिनत तेले तप हुए। पूरे समाज के मुंह पर एक ही जुवान थी। ऐसे

आत्म-भीने वातावरण में पर्युषण आराधना कई वर्षों के पश्चात हुई है। जैन सोसायटी ह्युष्टन के अध्यक्ष श्री रजनी भाई तथा प्रमुख ट्रस्टी श्री राजीव जैन ने पूज्यवर के प्रति आभार प्रकट करते हुए बार-बार ह्युष्टन शहर पधारने की विनती की।

पूज्यवर का ह्युष्टन प्रवास को सफल बनाने में श्रावक-श्रेष्ठ श्री विरेन्द्र भाई भारती बेन कोठारी परिवार का विशेष योग-दान रहा। कोठारी परिवार ने पूज्यवर के आरोग्य आदि का विशेष ख्याल रखा ही, परिवार के चार-चार युवाओं ने अठाई तप की आराधना की। हर बार ह्युष्टन यात्रा में टेम्पल सिटी में पूज्यवर का विशेष प्रवचन रहता ही है। किंतु इस बार अति व्यस्तता और स्वास्थ्य को ध्यान ऐसा संभव नहीं हो पाया। टेम्पल सिटी प्रवचन के संयोजक श्री केवल आशा जैन ने ह्युष्टन आकर पूज्यवर के चरणों में विनयांजलि अर्पित की।

5 सितम्बर को पूज्यवर ह्युष्टन से न्यूजर्सी पधारे, जहां सिद्धाचलम् तीर्थ के आजीवन ट्रस्टी श्री माधव सुषमा जैन के आवास पर रात्रि विश्राम हुआ। उल्लेखनीय है पूज्य आचार्यश्री सुशील मुनि द्वारा संस्थापित सिद्धाचलम् तीर्थ के आरंभ से लेकर आज तक श्री जैन साहिब संस्था के साथ पूरे समर्पित भाव से जुड़े है। विशेष यह है पूज्य आचार्यश्री रूपचन्द्रजी महाराज के साथ भी आप अनन्य आत्मीय भाव से जुड़े हुए है। सिद्धाचलम् में होनेवाली गतिविधियों के बारे में बराबर राय परामर्श विमर्श करते रहते है। 6-7 सितम्बर शनिवार रविवार को दिगम्बर जैन समाज दश लक्षण पर्व की विशेष पूजा-अराधना हर वर्ष सिद्धाचलम् तीर्थ में रखता है। उसी दृष्टि से पूज्य गुरूदेव का कार्यक्रम इस तीर्थ में रहा। इसी प्रसंग में तीर्थ के पूर्व अध्यक्ष श्री रमण शशि डागा के पेंसिल्वेनिया आवास पर एक विशेष पूजा-अराधना रही, जिसमें युवा श्री सुयश मुनि एवं योग निष्णात श्री अमरेन्द्र मुनि भी सहभागी बने।

सिद्धाचलम् तीर्थ-प्रवास में संगरूर निवासी लाला श्री वीरबलदासजी की सुपुत्री मधु नरेन्द्र गुप्ता ने भी सत्संग सेवा लाभ दिया। 10-11 सितम्बर को पूज्यवर लिंविस्टन शहर में श्री हेमेन्द्र दक्षा पटेल के आवास पर बिराजे। यह परिवार पूज्यवर की 1999 की धर्म-प्रसार यात्रा के समय से इतना आत्मीय प्रेम से जुड़ा है कि मानव मंदिर मिशन का न्यूजर्सी में कार्य शुरू किया जाए तो अपने विशाल भवन का उपयोग खुशी-खुशी करने देने

को तत्पर है। 11 सितम्बर रात्रि को हुई धर्म चर्चा में प्रमुख विषय ध्यान अभ्यास का रहा, जिसमें अनेक परिवारों ने आत्म लाभ लिया।

12-13 सितम्बर का प्रवास समाज सेवी श्री आनन्दजी रत्नाजी नाहर के आवास पर एंगलवुड, न्यूजर्सी में रहा। न्यूयार्क शहर के हीरे जवाहरात के व्यापारी बड़ी संख्यां में इसी शहर में रहते है। श्री आनन्दजी नाहर जैन सेंटर ऑफ अमेरिका, हिन्दी भाषी पर्युषण आराधना पर्व तथा राजस्थान एसोसियेशन ऑफ अमेरिका आदि अनेक संस्थाओं के संस्थापक सदस्यों में रहे है। पूज्यवर के मार्मिक प्रवचनों के प्रशंसक तथा श्रद्धा सद्भावना से जुड़ें हैं। नाहरजी के आवास पर 'ओम' का महत्व और अभ्यास कार्यक्रम में अनेक जिज्ञासु व्यक्तियों ने अनुभव लाभ लिया। एंगलवुड प्रवास में श्री रमेश जैन 'डागा' तथा श्री हुकमचन्द कांकरिया के आवास पर भी संक्षिप्त धर्म चर्चाएं हुई।

14 सितम्बर रविवार को न्यूयार्क में क्वींस जैन सेंटर में सामायिक आराधना संगोष्ठी में पूज्यवर ने बताया कि सामायिक का अर्थ आज अशुभ योग से निवृत्ति तथा शुभ योग में प्रवृत्ति तक सीमित कर दिया गया है। जब कि सामायिक का असली अभ्यास निर्विचार होकर आत्मस्थ होना है। यह संवर का अभ्यास है जहां काल की सूक्ष्म इकाई यमय के प्रति आत्म जागृति की अवस्था है।

रात्रिकालीन प्रवचन श्री नवीन राजश्री शाह के विशाल आवास पर उनकी पुत्री के अठाई तप के उपलक्ष्य में रहा। पूज्यवर ने कहा-तपस्या का उद्देश्य भगवान महावीर के शब्दों में- नन्नथ निज्जरठाए तव महिट्ठेज्जा केवल आत्म शुद्धि, कर्म-निर्जरा, के लिए तप की आराधना की जाए। जो लोग तपस्या नहीं कर सकते हैं, वे तप और तपस्वी का गुणानुवाद करे, मन में प्रमोद भाव लाए, वे भी आत्म आराधना की ऊंचाई छू सकते है। श्री शाह के इस समारोह में समाज बड़ी संख्या में उपस्थित था।

15-16-17 सितम्बर के न्यूयार्क प्रवास में श्री बच्चुभाई मधुबेन मेहता, श्री के.के. चन्द्रा मेहता तथा श्री धनराज भाई चेतना बेन मेहता के आवास पर आयोजित कार्यक्रमों में समाज ने सत्संग भजनों का लाभ लिया। न्यूयार्क प्रवास में श्री धनराज चेतना बेन मेहता तथा डॉ. कैलाश सुनीता सिंघवी की विशेष सेवाएं रहीं। इस तरह अमेरिका की यह संक्षिप्त धर्म-यात्रा बहुत ही श्रद्धा-भावना पूर्ण तथा धर्म-प्रभावना पूर्ण रही। पूरे समाज ने पूज्य

गुरूदेव से स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए हर वर्ष अमेरिका पदार्पण की बार-बार विनती की।

इस यात्रा में पूज्यवर की कनाड़ा-यात्रा संभव नहीं हो पाई। कनाड़ा के शहर टोरंटो, स्कारबोरो, लंदन, विंडसर आदि अनेक क्षेत्रों ने अगली विदेश-यात्रा में कनाड़ा अवश्य पधारने की प्रार्थना की। 19 सितम्बर को सायं पूज्यवर सकुशल दिल्ली एअरपोर्ट पधार गए जहां श्री सौरभ मुनि, ट्रष्ट-महासचिव श्री आर. के. जैन, रूपरेखा संपादिका श्रीमती निर्मला पुगलिया, प्रेमल हृदय श्री सुभाष प्रियंवदा तिवारी, सोनू श्री शैलेन्द्र कुमार झा (सी.ए.), व्यवस्थापक अरूण तिवारी तथा गुरूकुल के बच्चों ने पूज्य गुरूदेव का स्वागत जय-जय के नारों से किया।

जैन आश्रम पहुंचने पर पूज्या संघ प्रवर्तिनी साध्वी मंजुला श्री जी, सरलमना साध्वी मंजु श्रीजी आदि साध्वी समुदाय ने मानव मंदिर मिशन से जुड़े श्रावक-समुदाय तथा स्टाफ-कर्मचारियों के साथ पूज्यवर की सफल विदेश यात्रा की संपन्नता पर आनंद और उल्लास भरा अभिनंदन किया।

<u>पूज्यवर के जन्मोत्सव पर भव्य आयोजन</u>

22 सितम्बर को पूज्य गुरूदेव का 69 वां जन्म दिन बड़े उत्साह से भक्तजनों ने मनाया। अल्प सूचना पर ही मानव मंदिर केन्द्र का विशाल प्रांगण खचाखच भर गया। मंत्रोच्चार के साथ ही कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। साध्वी समुदाय के मंगलगीत से मंगलाचरण हुआ। श्रीमती मंजुबाई जैन, श्रीमती निर्मला पुगलिया तथा श्रीमती रीटा जैन द्वारा द्वीप प्रज्वलन किया गया। परम पूज्या संघ प्रवर्तिनी साध्वी श्री मंजुला श्री जी महाराज ने नवरचित कविता द्वारा पूज्यवर को जन्मोत्सव की बधाई दी। साध्वी मंजु श्री जी महाराज तथा साध्वी चांद कुमारी जी महाराज ने पूज्य गुरूदेव को अपनी मंगल भावनाओं द्वारा बधाया। साध्वी कनकलता जी के नेतृत्व में साध्वी समुदाय ने जन्म दिवस पर मंगल गीत गाकर पूज्यवर को जन्म दिन की बधाई दी।

श्रीमती मंजुबाई जैन ने अपनी मधुर गीतिका गाकर सबका मन मोह लिया। श्री जगत सिंह नाहटा ने भी भजन गाकर पूज्यवर को बधाई दी। श्री राज कुमार जी तथा मोहित ने भजन प्रस्तुत किया। श्रीमती दुर्गा देवी जैन ने भी मंगल गीत गाकर बधाई दी। स्वीडन से आये श्री अवधेश तिवारी ने पूज्यवर के चरणों में अपने भाव अर्पित किये।

सौरभ मुनि ने गुरूचरणों में मधुर गीत के साथ अपनी मंगल भावनायें प्रगट की।

कार्यक्रम का संयोजन साध्वी समताश्री ने किया।

पूज्य गुरूदेव आचार्य श्री रूपचन्द्र जी महाराज ने अपने प्रवचन के माध्यम से जो अमृतवर्षा की सारे भक्तजन झूम उठे। तालियों की गड़गड़ाहट से सभास्थल गूंज उठा। पूज्यवर ने फरमाया-हमें सौभाग्य से मानव जीवन मिला है। सोचना यह है हम जीवन किस प्रकार जीते हैं। प्रवृति हर जीवन के साथ जुड़ी होती है। किन्तु महत्वपूर्ण प्रवृति नहीं, हमारी वृत्ति होती है। इसलिए भगवान महावीर ने हर परिस्थिति में समता-भाव पर बल दिया। गीताजी में तो समत्वं योग उच्यते - समता को योग ही बताया गया है। जीवन के हर उतार-चढ़ाव में हम समता-भाव बनाये रखें। यही आनंदपूर्ण जीवन जीने की कला है। मधुर प्रवचन-भजन तथा अंत में मधुर प्रसाद भोजन का सबने खूब आनंद उठाया।

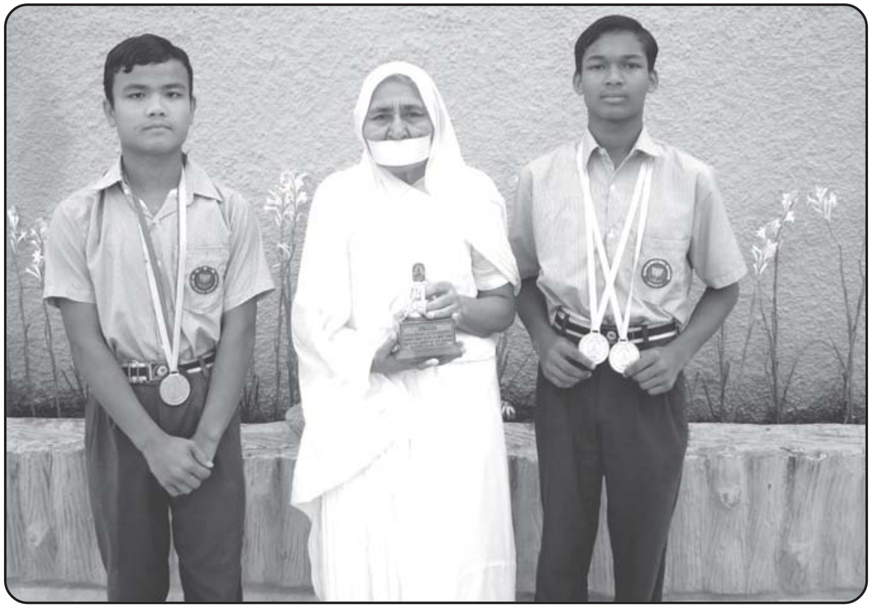

-उत्तर भारतीय अन्तर्विद्यालय योग-प्रतिस्पर्धा में मानव-मंदिर गुरूकुल के छात्र सुशान्त और गगन स्वर्ण पदकों के साथ पूज्या महासती मंजुलाश्री जी। ये दानों प्रतिभाएं लगातार दूसरे वर्ष भी प्रथम स्थान पर बरकरार हैं।

-संवत्सरी महापर्व पर प्रवचन करते हुए पूज्या प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री जी तथा सरलमना साध्वी मंजूश्री जी।

-श्री सौरभ मुनि मौन अठाई तप-जप के पश्चात् अभिमंत्रित माला प्रदान करते हुए।

-पूज्य गुरूदेव के अभिनन्दन-गीत गाते हुए साध्वी समुदाय।

-जन्मोत्सव पर मधुर गीतिका प्रस्तुत करती हुई समाज सेवी श्रीमती मंजुबाई जैन।

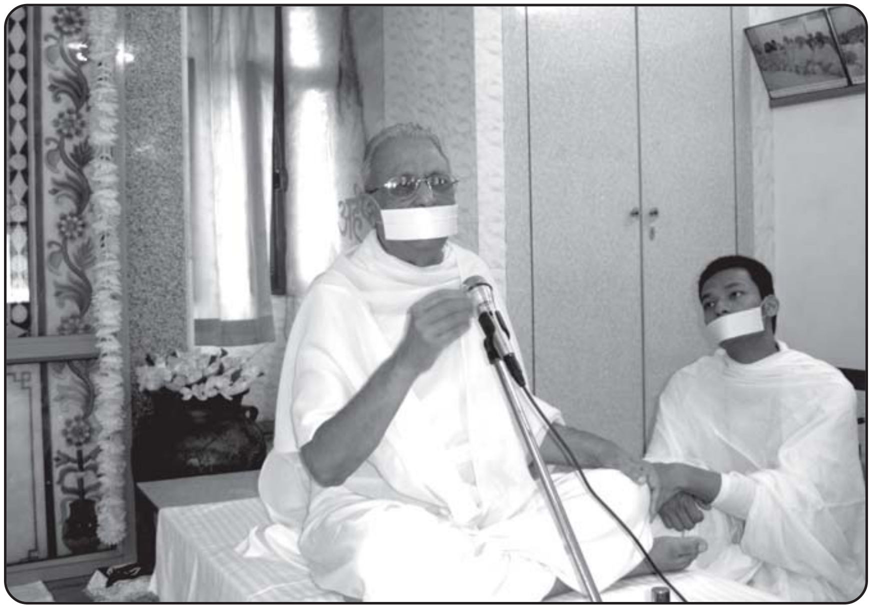

-पूज्य गुरूदेव अपना उद्बोधन-प्रवचन करते हुए।

-प्रवचन का आनंद लेते हुए जन-समुदाय।

-जैन सोसायटी ऑफ ह्युष्टन के अध्यक्ष श्री रजनी भाई, प्रमुख ट्रष्टी श्री राजीव जैन आदि पदाधिकारी पूज्य आचार्यश्री रूपचन्द्रजी के साथ।

-पर्युषण-आराधना करते हुए ह्युष्टन-जन-समुदाय की एक झलक।